International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सोशल मीडिया माध्यमों पर दिखाए जाने वाले चुनावी विज्ञापनों का विश्लेषण

प्रेम प्रताप सिंह

रिसर्च स्कॉलर, विवेकानंद ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

शोध सार

राजनीति में सोशल मीडिया के प्रभाव की बात करें तो सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक प्रक्रियाओं और गतिविधियों में अत्याधिक प्रतीत होता है और यह सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के उपयोग को संदर्भित करता है। यहां सर्वप्रथम मीडिया-सोशल और मीडिया को समझना जरूरी है। मीडिया से तात्पर्य संवाद व संचार के जन माध्यम से है और सोशल मीडिया जिसका सर्वाधिक आधुनिक व प्रचलित माध्यम बन गया है, जिसकी कमान किसी सम्पादक या संवाददाता के पास न होकर एक आम आदमी के हाथ में होती है। जिसके माध्यम से समाज का वह व्यक्ति जो इंटरनेट, मोबाइल और तकनीकी का प्रयोग करता हो वह अपनी बात को विश्व के किसी भी कोने पर अनगिनत लोगों तक पहुंचाने में सक्षम है। सोशल मीडिया जहां तेज गति से सूचनाओं का आदान प्रदान करने, मनोरंजन, अपनी कला को प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच बन गया है। वहीं यह रोजगार व आय के साधन जुटाने में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। व्यक्ति इसके माध्यम से प्रसिद्ध होने के साथ ही आजीविका उपार्जन भी कर सकता है। सोशल मीडिया की वजह से समाज में राजनीतिक हलचलें भी बढ़ी हैं। हर कोई व्यक्ति अपनी बात को बहुत कम समय में समाज के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी रूप से पहुंचा सकता है। राजनीति के क्षेत्र में यदि सोशल मीडिया की बात करें तो एक-दूसरे की कमियों को उजागर कर उन्हें सोशल मीडिया पर बड़ी तेजी से प्रसारित किया जाता है। वहीं हर राजनीतिक व्यक्ति अपनी उपलब्धियों को सोशल मीडिया के अलग-अलग माध्यमों (फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर आदि) के द्वारा वीडियो बनाकर, स्टेट्स डालकर, ट्विट कर व न्यूज पोर्टल में खबरें प्रसारित कर लोगों तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं।

सोशल मीडिया का प्रयोग राजस्थान के विधान सभा चुनाव 2023 में खूब देखने को मिला, जहां बडे-बडे राजनेता अपने ट्विटर हैंडल से अपनी बात व विपक्ष की कमजोरियों को ट्विट कर लोगों तक पहुंचे हैं, वहीं अपनी तथा अपनी पार्टी की छोटी –बड़ी उपलब्धियों का भी बढ़ा-चढ़ा कर प्रचार-प्रसार किया। शोध विषय पर किया गया अध्ययन को आगे विस्तार से बताया जाएगा।

कुंजी शब्द: राजनीति, सोशल मीडिया, प्रचार, राजनीतिक दल, फेसबुक

प्रस्तावना -

सोशल मीडिया आज के समय में प्रचार का सबसे सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। प्राय: सभी बड़ी कंपनियों ने अपने उत्पाद का प्रचार सोशल मीडिया पर कर रही है। राजनीतिक दल भी इसमें पीछे नहीं है। हर चुनाव में राजनीतिक दल मतदाताओं के मनोविज्ञान पर असर डालने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। खासतौर पर फेसबुक, एक्स आदि का पूरा इस्तेमाल किया जा रहा है। राजनीतिक दल सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर का भी सहारा ले रहे हैं। अभी हाल में ही बीजेपी ने व्हाट्सएप पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से पत्र भेजकर मतदाताओं से सीधे जुड़ने का प्रयास किया था। कांग्रेस भी राहुल गांधी व्हाट्सएप समूह के नाम से संचालन कर रही है। जैसे जैसे इन माध्यमों की पहुंच बढ़ रही है, वैसे वैसे राजनीतिक दलों के बीच इनकी लोकप्रियता भी बढ़ रही है।

राजस्थान विधान सभा चुनाव 2023 में यह देखा गया कि 2018 विधान सभा चुनाव की तुलना में विधान सभा चुनाव 2023 में राजनीतिक पार्टियों ने व इनके प्रत्याशियों व निर्दलीय प्रत्याशियों ने अपनी बात को आम जन तक, मतदाताओं तक पहुंचाने के सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग किया है। जो विज्ञापन कभी समाचार पत्र या पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाते थे वे इस समय सोशल मीडिया पर भी बहुतायत में प्रकाशित व प्रसारित किए गए।

इस शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया कि राजनीतिक दल चुनाव के दौरान किस प्रकार से सोशल मीडिया माध्यमों का उपयोग करते है। इसके लिए फेसबुक पर दिए जाने वाले चुनावी विज्ञापनों का विश्लेषण किया गया। इस शोध पत्र में मुख्यत: फेसबुक पर दिए गए चुनावी विज्ञापनों का विश्लेषण किया गया।

राजस्थान विधान सभा चुनाव 2023 और सोशल मीडिया पर चुनाव संबन्धी विज्ञापनों का विश्लेषण -

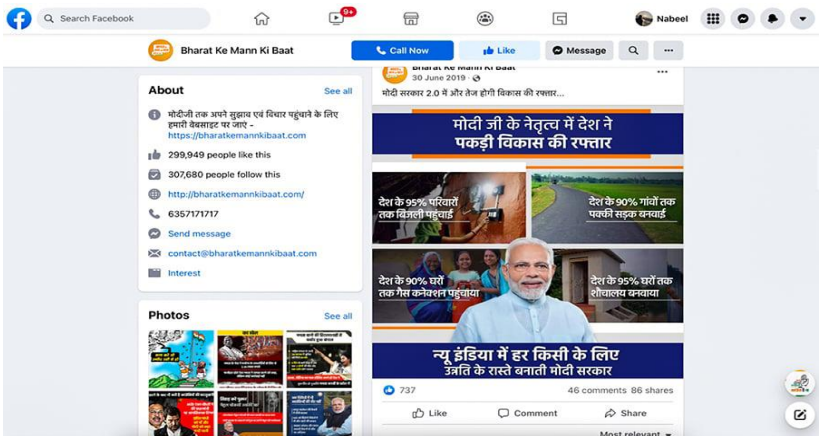

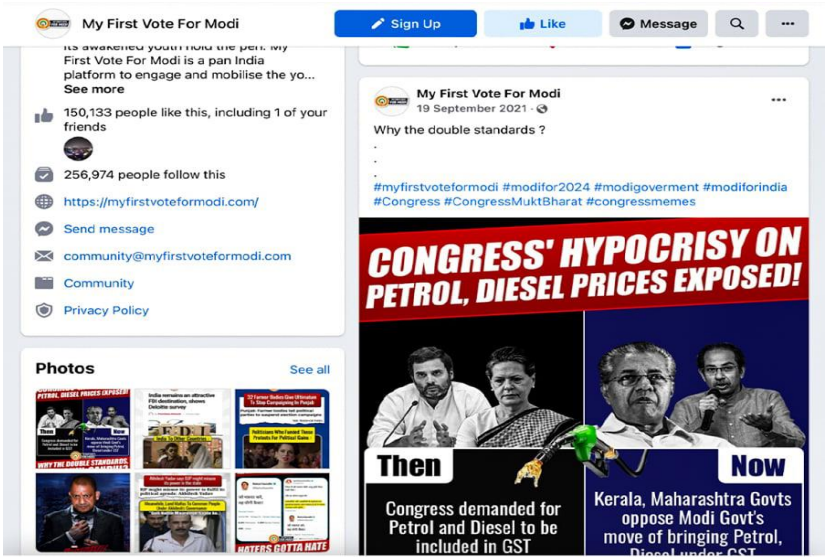

पिछले पांच वर्षों में फेसबुक पर विज्ञापन खर्च करने वालों में राजनीतिक दल सबसे बड़े हैं; इस सूची में बीजेपी शीर्ष पर है पिछले पांच वर्षों में, फरवरी 2019 से फरवरी 2023 के बीच, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने फेसबुक विज्ञापनों पर कम से कम ₹33 करोड़ खर्च किए। हालाँकि यह बहुत बड़ा नहीं लग सकता है, यह उस पूरे पैसे का लगभग 10 प्रतिशत है जो सभी विज्ञापनदाताओं ने भारत में फेसबुक विज्ञापन चलाने के लिए उस अवधि में संचयी रूप से खर्च किया है।

जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने ₹10.58 करोड़ खर्च किए, अन्य बड़े खर्च करने वाले भी इंडिया ब्लॉक का हिस्सा हैं - ऑल इंडियन तृणमूल कांग्रेस(एआईटीसी), जिसने ₹8.04 करोड़ खर्च किए और द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके), जिसने ₹ खर्च किए। 4.31 करोड़. ये संख्याएँ बिजनेसलाइन के उन पृष्ठों के विज्ञापन व्यय के विश्लेषण पर आधारित हैं जिन पर इन राजनीतिक दलों के नाम हैं। व्यक्तिगत राजनेताओं के फेसबुक पेजों द्वारा चलाए गए विज्ञापनों पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

भाजपा के आधिकारिक फेसबुक पेज ने पांच वर्षों में भारत में विज्ञापन चलाने के लिए सबसे अधिक धनराशि खर्च की है - ₹10.27 करोड़। इसके बाद कू ऐप है, जिस पर ₹7.2 करोड़ खर्च हुए और एआईटीसी का 'बांग्लार गोर्बो ममता' पेज है, जिस पर ₹5.86 करोड़ खर्च हुए। भारत में फेसबुक के शीर्ष 15 विज्ञापनदाताओं में से छह भाजपा द्वारा संचालित पेज हैं। उनमें से दो आईएनसी द्वारा संचालित हैं।

सूची में 'एक धोखा केजरीवालने' भी शामिल है, जो एक बदनामी वाला पेज है जो नियमित रूप से दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बदनाम करता है। इस पेज का नाम पहले 'पलटू एक्सप्रेस' था और इसने विज्ञापनों पर ₹3.19 करोड़ खर्च किए। एक अन्य बदनामी पेज 'उल्टा चश्मा' लगातार राहुल गांधी, ममता बनर्जी और केजरीवाल सहित इंडिया ब्लॉक के कई नेताओं को बदनाम करता है। विज्ञापनों पर ₹1.93 करोड़ खर्च कर यह भी इस सूची का हिस्सा है। (पार्वती बेनु, Buisnessline, Feb 29, 2024)

सोशल मीडिया पर अपनी पोस्ट के बढ़ते हुए व्यू, लाइक, यूजर्स किसे पसंद नहीं आते…। कई लोग तो इसे अपनी सोशल असेस्ट्स मानते हैं लेकिन चुनाव में प्रत्याशियों की यह संपत्ति उनका खर्च बढ़ाने वाली भी है। यूट्यूब पर उनका चुनावी विज्ञापन प्रदर्शित करते हैं तो एक व्यक्ति के देखने पर उनके चुनावी खर्च में 30 पैसे का खर्च बढ़ा

देगा। इसी तरह सोशल मीडिया के अन्य प्लेटफार्म का उपयोग भी खर्च बढ़ाने वाला ही है।

विधानसभा में पहुंचने के लिए कई प्रत्याशी चुनाव प्रचार में सोशल मीडिया का भी जमकर उपयोग कर रहे हैं। प्रत्याशियों के लिए यह ऐसा माध्यम साबित हो रहा है। इसके जरिए वे बेहद कम समय में बड़े समूह में लोगों के बीच अपनी बात रख पा रहे हैं। हालांकि प्रिंट, इलेक्ट्रानिक मीडिया के विज्ञापन की तरह सोशल मीडिया के विज्ञापन का खर्च भी चुनावी खर्च में भी जुड़ेगा। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया की तरह सोशल मीडिया पर भी विज्ञापन प्रसारित करने के लिए अनुमति लेना होगी। इनके लिए तय नीति अनुसार दरें भी निर्धारित की गई है। चुनावी खर्च में बल्क एसएमएस के खर्च को भी शामिल किया गया है। इनके अलावा यदि अभ्यर्थी सामान्य चुनावी पोस्ट करता है तो उसका भी निर्धारित न्यूनतम शुल्क खर्च के ब्योरे में जुड़ेगा।

सोशल मीडिया पर चुनाव विज्ञापन के बढ़ते प्रचलन को देखते हुए चुनाव आयोग को भी कई नियम व आदेश पारित करने पड़े। चुनाव आयोग के निर्देशानुसार विज्ञापन, समाचार आदि पर निगरानी के लिए जिला स्तरीय एमसीएमसी कमेटी गठित की गई है। दल प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया पर आने वाले समाचार, विज्ञापन की निगरानी तो कर ही रहा है, सोशल मीडिया पर भी पैनी नजर रखी गई। इसके लिए सभी प्रत्याशियों से उनके सोशल मीडिया के विभिन्न अकाउंट आइडी प्राप्त किए हैं। इन पर अपलोड होने वाली पोस्ट के कंटेंट, विज्ञापन आदि का सतत अवलोकन किया जाता रहा।

चुनाव से ठीक पहले गहलौत सरकार ने सोशल मीडिया पर विज्ञापनों के लिए एक घोषणा भी की थी कि सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर्स को प्रति माह 10 हजार से 5 लाख तक के विज्ञापन दिए जाएंगे। जिसका प्रभाव सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों पर काफी पड़ा और सोशल मीडिया पर राजनीतिक विज्ञापनों व चुनाव के प्रचार प्रसार से संबन्धित विज्ञापनों का प्रचलन अत्यधिक रूप से बढ गया।

अध्ययन व विश्लेषण के बात अंतत: देखें तो जहां राजनीतिक पार्टियों व प्रत्याशियों ने सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए अपने चुनाव प्रचार – प्रसार के लिए सोशल मीडिया को एक सशक्त माध्यम के रूप में चुना वहीं तत्कालीन मौजूदा गहलौत सरकार ने भी सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर्स को लालच देकर उन्हें प्रभावित करने का भी प्रयास किया, जिससे राजस्थान चुनाव 2023 में सोशल मीडिया पर चुनाव प्रचार के काफी विज्ञापनों का प्रसार देखने को मिला।

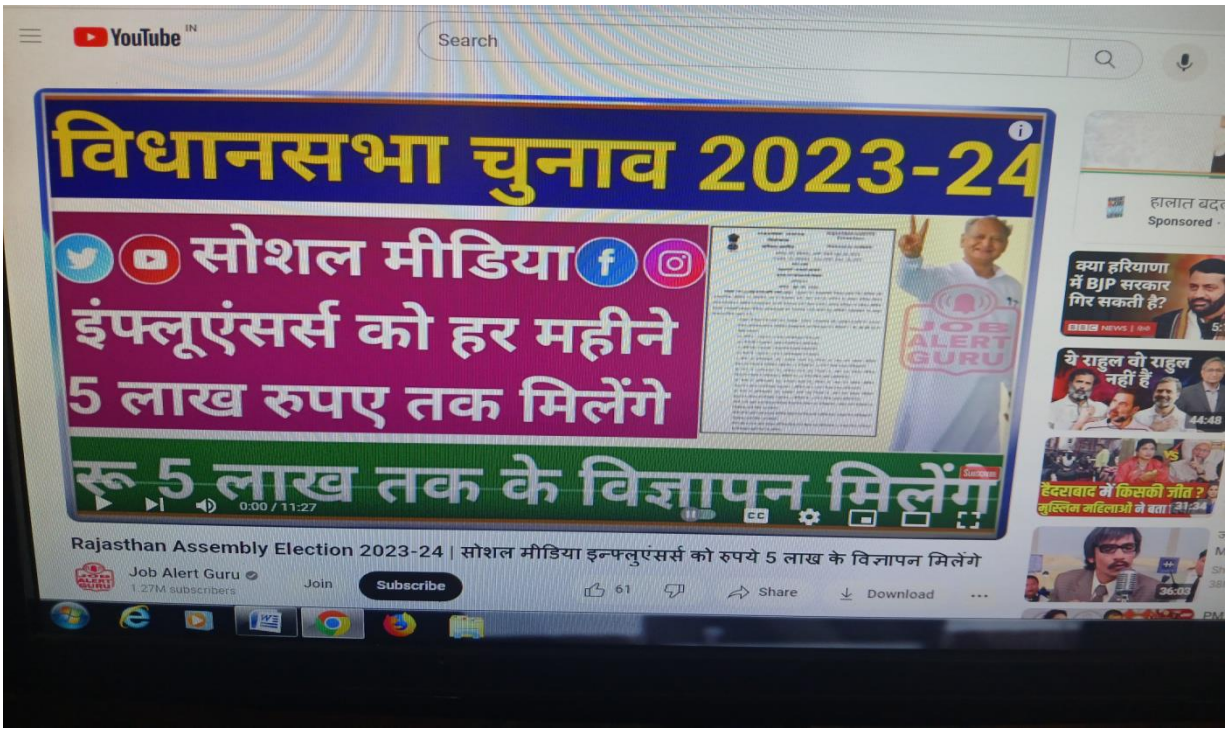

निष्कर्ष -

सोशल मीडिया माध्यमों पर दिखाए जाने वाले चुनावी विज्ञापनों का विश्लेषण व अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि राजस्थान विधान सभा चुनाव 2023 में सोशल मीडिया पर प्रसारित किए जाने वाले राजनैतिक पार्टियों के विज्ञापनों की तादात काफी अधिक रही है। राजनीतिक पार्टियों ने आज के डिजिटल और न्यू मीडिया के युग में अपनी पार्टियों व प्रत्याशियों के प्रचार- प्रसार के लिए विज्ञापनों के प्रसारण के लिए सोशल मीडिया का अधिक प्रयोग किया। विषय पर सामाजिक-संचार शोध के तहत अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ है कि राजस्थान के विधानसभा चुनाव 2023 में सोशल मीडिया की भूमिका रही है। ज्यादातर पार्टी के दिग्गज नेताओं ने अपनी बात को जनता तक पहुंचाने के लिए ट्यूटर का प्रयोग किया, न्यूज पोर्टल व न्यूज चैनलों के यूट्यूब पर प्रसारित समाचारों ने भी चुनाव प्रचार व नेताओं की बात को जनमानस तक पहुंचाने में महत्वपूर्णभूमिका निभाई है। स्थानीय न्यूज पोर्टल, यूट्यूब, फेसबुक पर विज्ञापन वीडियो व पोस्टर बनाकर प्रकाशित व प्रसारित किए गए।

संदर्भ सूची

1. कैनिज़ेल्स, ए. (2010). मीडिया, लोकतांत्रिक सरकार और सार्वजनिक राजनीति. कराकस: यूनिवर्सिडैड सिमोन बोलिवर.
2. *"MOSPI Net State Domestic Product, Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India". अभिगमन तिथि 7 April 2020.*
3. *PTI (1 September 2019). "Kalraj Mishra is new governor of Rajasthan, Arif Mohd Khan gets Kerala. India News - Times of India". The Times of India (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 1 September 2019.*
4. *"Rajasthan Profile" (PDF). Census of India. मूल से 16 September 2016 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 21 July 2016.*
5. रयाल, राकेश चन्द्र (2019), भारत में इलैक्ट्रॉनिक एवं न्यू मीडिया, समयसाक्षय प्रकाशन, देहरादून, उत्तराखण्ड.
6. *"Report of the Commissioner for linguistic minorities: 52nd report (July 2014 to June 2015)" (PDF). Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. पृ॰ 34–35. मूल (PDF) से 28 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 फ़रवरी 2016.*
7. *"Sub-national HDI – Area Database – Global Data Lab". hdi.globaldatalab.org (अंग्रेज़ी में). मूल से 23 September 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 September 2018.*
8. *सक्सेना, हरमोहन (2014). राजस्थान अध्ययन. जयपुर: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर. पृ॰ 3.*
9. http://hindi.mapsofindia.com/rajasthan/jaipur/places-of-interest/ Archived 2016-09-19 at the वेबैक मशीन जयपुर के दर्शनीय स्थल
10. https://www.thehindubusinessline.com/data-stories/data-focus/political-parties-among-biggest-facebook-ad-spenders-in-the-last-five-years-bjp-tops-the-list/article67895296.ece
11. https://www.patrika.com/bharatpur-news/rajasthan-assembly-elections-2023-posts-on-social-media-are-increasing-election-expenses-of-candidates-8582233
12. Businessline
13. Facebook.com
14. Wikipedia